



GILLETTE MIND

Ferdinando Frega — Nando the Scribe

जिलेट मन

यह कोई आम पोस्ट नहीं है, वह आम संदेश नहीं जिसे दुनिया में भेजने की ज़रूरत आदमी को महसूस होती है। यह उन पलों में से एक है जो इंसान की ज़िंदगी पर छपे रह जाते हैं।

जब मैंने पहली बार लिखना शुरू किया, मैं सिर्फ़ 3 साल का था। मुझसे अभी पेन या पेंसिल सँभलती नहीं थी, पर पहली चीज़ जो मैं खींच पाया वह एक त्रिकोण था।

मेरे पिता हैरान रह गए। मेरी माँ ने इसे संयोग माना — उन्होंने मुझसे दोबारा कोशिश करवाई, और वह हर बार छोटा निकलता गया, पर हमेशा त्रिकोण ही।

बड़े होते हुए किसी ने मुझे कभी नहीं समझाया कि उसका मतलब क्या था। फिर एक दिन, एक कैथोलिक बोर्डिंग स्कूल में, मेरी समझ में आया कि उसके भीतर एक प्रार्थना बसी है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर।

वह पूर्णता थी — और है। दो या ज़्यादा त्रिकोणों का जोड़ एक चौकोर बनाता है, और यह धारणा कि चौकोर ही पूर्ण ज्यामितीय आकृति है, एक पल में ढह गई, शक की ज़रा भी गुंजाइश छोड़े बिना।

और जिलेट में इतने बरसों में, किसी बैठक में किसी ने कभी नहीं कहा: आइए समस्या को चौकोर करें। इसके बजाय जो सुनाई देता था — और वह सही था — वह यह था: आइए हालात का त्रिकोण बनाएँ, कमज़ोर हिस्से पहचानें, मज़बूत हिस्से, और वे जिन्हें सुधारना बनता है।

आज मेरा त्रिकोण जिलेट गाथा का समापन है। लक्ष्य की तरह नहीं, योजना की तरह नहीं — बल्कि लिखने की सहज प्रवृत्ति की तरह और गहरे सम्मान के एक अनोखे काम की तरह।

उन सबके लिए जो पढ़ने आएँगे: छोटी खुराकें। कभी सब कुछ एक साथ नहीं। वरना दिमाग़ ठीक से छान नहीं पाता।

सफ़र का मज़ा लीजिए।

आपका स्वागत है।

नांदो